Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

"ग्रामीण सभ्यता पर नगरीय सभ्यता का प्रभाव"

('अलग-अलग वैतरणी' उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में)

रवि यादव
(शोधार्थी)
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी
ईमेल-ravviyyadav@gmail.com
मोबाइल नं-6387535754

शोध सारांश:-

आंचलिक उपन्यासकार शिव प्रसाद सिंह का उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' ग्रामंचल पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि ग्रामीण सभ्यता पर नगरी सभ्यता का क्या-क्या प्रभाव पड़ा है। क्योंकि बिना परिवर्तन के कोई भी समाज अछूता नहीं रहा है। परिवर्तन ही प्रकृति के विकास की जननी कही जाती है, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का अपरिहार्य एवं आवश्यक नियम है। इसी परिवर्तन के चलते ही इस पृथ्वी पर जीव जंतुओं के साथ-साथ मनुष्य ने अपना अस्तित्व निर्माण किया है। आज ग्रामीण समाज भी परिवर्तन के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। ग्रामीण मूल्यों एवं जीवन शैली में परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है। ग्रामीण समाज अपनी मूल संरचना व मौलिकता को खोता जा रहा है, जिसका स्थान विभिन्न शक्तियों के संघातों एवं नगरीकरण व नगरी सभ्यता के मूल्य लेते जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप वर्तमान ग्रामीण समाज में नवीन मूल्यों एवं प्रवृत्तियों का जन्म हो रहा है।

बीज शब्द:- *परिवर्तन, मूल संरचना, औद्योगिकरण, नगरी संस्कृति, जड़ता, टूटन।*

प्रस्तावना:-

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय ग्रामीण समुदाय स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर इकाई के रूप में पहचाना जाता था। ब्रिटिश शासन ने यहां के स्थिर जनमानस के जीवन में हलचल पैदा कर दी और यहां के लघु एवं कुटीर उद्योगों को समाप्त कर औद्योगिककरण तथा नगरीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान किया। इन जटिल प्रक्रियाओं ने ग्रामीण समाज को इतना अधिक परिवर्तित कर दिया कि अन्य कारकों का प्रभाव गौण सा लगने लगा। ग्रामीण मूल्यों तथा ग्रामीण जीवन शैली का स्थान नगरी संस्कृति में के मूल्य एवं प्रवित्तीय ने ले लिया। आज ऐसा कोई भी गांव अपवाद रूप में नहीं बचा है, जो नगरी संस्कृति व मूल्यों से अछूता हो ग्रामीण समाज में परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों जैसे- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक आदि में प्रभावपूर्ण ढंग से परिलक्षित हुए हैं।

ग्रामीण सभ्यता पर नगरी सभ्यता का प्रभाव:-

'अलग-अलग वैतरणी' में उपन्यासकार ने ऐसे ग्रामीण जीवन को समग्रता में प्रस्तुत किया है, जो समय के साथ बदलता रहा है। संभव है कि बाहर से देखने पर उसमें ज्यादा बदलाव ना आया हो, परंतु आंतरिक रूप से अवश्य ही बदलाव हुए हैं, और पुरानी नैतिकता-मर्यादा इस हद तक टूटी है, कि गांव बिखरा-बिखरा प्रतीत होता है। करैता गांव के माध्यम से शिव प्रसाद ने भारत की टूटती ग्राम व्यवस्था का संकेत करते हैं, जिसे कार्ल मार्क्स ने कई दशक पूर्व ग्राम विघटन के लिए ब्रिटिश उपनिवेश को दोषी ठहराया

था। अनगिनत यंत्रणाओ से गुजरते हुए भारत के गांव किसी ना किसी रूप में आज भी संघर्ष कर रहे हैं। इसी संघर्ष को 'अलग अलग वैतरणी' के करैता गांव में दिखाया गया है, जिसे समस्त ग्राम जीवन की झलक के रूप में देखा जा सकता है।

'अलग अलग वैतरणी' में शिव प्रसाद सिंह ने स्पष्ट रूप से यह दिखाने की चेष्टा की है, कि जमीदारी टूटने के बाद किस तरह परिस्थितियां बदली हैं। इस बात को मेले के दौरान स्वीकार भी किया गया है, "जमाना तेजी से बदल रहा था। जमीदारी की पुश्तैनी पुख्ता दिवाले एक हल्के धक्के से ही जमीन पर आ रही, देखते ही देखते करैता का पूरा माहौल बदल गया.....। यह सब कुछ ताश के पत्ते की तरह हल्के से धक्के से बिखर गया।"1 गांव का इस तरह टूटना बिखरना उस समय भी नहीं हुआ था, जब पाटलिपुत्र, अवंतिका, उज्जैनी जैसे महत्वपूर्ण राज्य केंद्र थे अथवा आगे चलकर मुगलों ने दिल्ली, आगरा को अपनी राजधानी बनाया था। परंतु जब साम्राज्यवादी शक्तियों ने क्रमशः एक नगर सभ्यता के निर्माण का निर्माण का कार्य आरंभ किया और गांव के अनांदोलित जीवन पर भी तरह-तरह के दबाव पड़ना आरंभ हो गया। यह दबाव ग्रामीणों पर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सभी स्तर पर पड़ता है। जिसके परिणाम स्वरूप यह देखा जा सकता है, कि गांव में भी जिंदगी ने काफी तेजी से रफ्तार पकड़ी है। अब गांव, गांव नहीं रह गए हैं। गांव में भी तमाम सुख-सुविधा का विकास हो गया है। जैसे- पक्की सड़कें, उच्च शिक्षा की व्यवस्था, पक्के मकान, मनोरंजन के साधन, बिजली, पानी की सुविधा आदि।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव :-

नगरीकरण तथा नगरीय सभ्यता का ग्रामीण सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। खान-पान रहन-सहन तथा जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज भोजन लौकिक तथा उपयोगितावादी दृष्टिकोण से ग्रहण किए जाते हैं। साथ ही भोजन की पवित्रता भी नहीं रही है, मांसाहार से लेकर तमाम देसी-विदेशी व्यंजन का स्थान ग्रामीण भोजन में शामिल हो गया है। आज भारतीय ग्रामीण पहनावा भी बदल रहा है पुरुषों ने धोती-कुर्ता तथा साफ़ा के स्थान पर पेंट, जींस, टी-शर्ट, टोपी आदि धारण करने लगा है। पुरुषों के अलावा स्त्रियों की वेशभूषा में भी काफी बदलाव आया है। आज ग्रामीण स्त्रियां सूट सलवार तथा तरह-तरह के पोशाक धारण कर रही हैं। पोषाक के साथ-साथ मानसिकता में भी काफी बदलाव आया है। इसी बदलाव को उपन्यास के पात्र जग्गन मिसिर एक स्थल पर सोचते हैं कि "आखिर क्या हो गया है, इन सीधे-साधे जीवन में डूबे रहने वाले लोगों को। ऐसी विरक्ति, ऐसी तटस्थता ऐसा निर्मोही अलगाव क्यों"?2 गांव की टूटी हुई जिंदगी के यथार्थ चित्रण के बावजूद कहीं कथाकार के अवचेतन में एक अबोली पीड़ा विद्यमान है, कि आखिर 'खेतों की यह हरी-भरी मेड़े क्यों कट रही हैं? कौन सा सैलाब है, जो इन्हें बहाए लिए जा रहा है? इन्हें नहीं टूटना चाहिए'। ग्रामीण जीवन पर नगरी सभ्यता का ऐसा प्रभाव पड़ा है कि मनुष्य यंत्रवत होता जा रहा है और संयुक्त परिवार की व्यवस्था भी टूटती जा रही हैं।

जातीय मूल्यों व अभिवृत्तियों पर प्रभाव :-

जातीय मूल्यों व अभिवृत्तियों में भी बदलाव आए हैं। जातियों के अजायबघर के रूप में पहचाने जाने वाले भारतीय ग्रामीण समाज में वर्ग व्यवस्था का जन्म हो रहा है, तथा सभी वर्ग अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं। इसी संघर्ष का ही परिणाम है कि गांव में चमारों की बस्ती में काफी तेजी से बदलाव आया है। निर्धन, असहाय, गूंगे लोगों की हुजूम समझे जाने वाली बस्ती के पक्ष में चौधरियों की बटोर (पंचायत) फैसला करती है, कि सुरजू सिंह कल सुबह सुगनी को अपनी पत्नी समझ कर खुद आकर चमरौटी से ले जाए, नहीं तो कल शाम को चमार लोग सुगनी को ले जाकर उसके घर बैठे आएंगे।"3 पद दलित और तिरस्कृत समाज में इतना साहस जगाकर शिव प्रसाद ने करैता के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ग संघर्ष का दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

धार्मिक जीवन पर प्रभाव :-

ग्रामीण समुदाय अध्यात्मवाद, धर्म, ईश्वर, नैतिकता तथा पवित्रता के प्रतीक माने जाते हैं। धर्म को लेकर उनमें काफी अंधविश्वास भी व्याप्त था। ऐसा ही अंधविश्वास करैता गांव के देवी धाम मंदिर से भी जुड़ा था। करैता गांव के लोगों की मान्यता थी कि "स्वर्गीय जमींदार जयपाल सिंह के पिता स्वर्गीय ठाकुर देवी चरण सिंह नीपूते थे। विंध्याचल में साक्षात भगवती ने दर्शन दिया उनको। फिर अपनी मूर्ति देकर कहा था, कि ले जाकर इसे अपने गांव में प्रतिष्ठित कर। तेरी सकल कामना पूरी होगी। देवी के इस प्रताप की कहानियां चारों ओर फैल गई और हर साल रामनवमी के अवसर पर बाँझ और निपूती औरतों की भीड़ इकट्ठा होने लगी"। 4 ऐसे कई अंधविश्वास ग्रामीण समुदाय का हिस्सा हुआ करती हैं परंतु नगरीकरण से इन अंधविश्वासों को कुछ हद तक कम करने में अवश्य ही सफलता प्राप्त हुई और धार्मिक कट्टरता का स्थान धार्मिक सहिष्णुता ने ले लिया। आज ग्रामीण समाज में धर्म का स्थान नगरों की कानून व्यवस्था ने ले लिया है। वे धर्म के द्वारा नियंत्रित ना होकर कानून द्वारा अधिक नियंत्रित हो रहे हैं।

आर्थिक जीवन पर प्रभाव :-

भारत मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है। यहां अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही है। नगरीकरण एवं औद्योगिक करण ने कृषि क्षेत्रों में अवश्य ही क्रांति ला दी है। नए-नए कृषि यंत्रों एवं खाद बीजों ने अवश्य ही उत्पादकता बढ़ाई है। परंतु इसका दुष्परिणाम भी पड़ा है, जिसके कारण मौसम की मार किसानों को झेलना पड़ रहा है। कभी-कभी इतनी बारिश हो जाती है, कि सारी फसल नष्ट हो जाती है तो कभी-कभी सूखे की मार से फसल जल जाती है। इसी का परिणाम है, कि गांव से लोग शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। उसकी धारणा बन रही है कि खेती-बाड़ी में अब कुछ रखा नहीं है- "मैं तो कह रहा हूं मिसिर जी कि टीमल सिंह को भी दुख नहीं करना चाहिए। ई खेती-बारी में का रखा है। महावीर स्वामी की कसम अब ई तो खेती डाड हो गई है। हरिया भागा तो अच्छा ही हुआ। कहीं दो पैसा कमायेगा तो आदमी बन जाएगा"। 5

ग्रामीण जीवन मूल्यों पर प्रभाव:-

ग्रामीण जीवन मूल्यों में परिवर्तन का एक प्रमुख कारण नगरी तथा पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था भी रही है। ग्रामीण अंधविश्वासों, आडंबरों तथा रूढ़ियों व कुरीतियों को पीछे छोड़ने तथा जागरूकता लाने में शिक्षा

भी प्रमुख कारण रही है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए युवा वर्ग नगरों की तरफ पलायन कर रहा है। उपन्यास में विपिन एवं डॉक्टर देवनाथ ऐसे ही पात्र हैं, जो उच्च शिक्षा के लिए नगर की तरफ पलायन करते हैं, तथा गांव की दशा सुधारना चाहते हैं। आज गांव में शिक्षा को लेकर लोगों की मानसिकता बदली है। जगन मिसिर हरखू सरदार से कहता है कि "ठीक है हरखू सरदार, पढ़े लिखे आदमी होंगे तभी ना हम लोगों की भी भाग्य पलटेगी। अभी तो सनीचर गोड़ तोड़े बैठा है। किसी को घर है, तो बैल नहीं। किसी के तन पर पूरा बस्तर नहीं। किसी को भरपेट खाने को अन्न नहीं। संस चल गई। किसानी तो जवाल हो गई है। बस ढोये जा रहे हैं। क्या करें कुछ चारा भी तो नहीं है"। 6

राजनीतिक जीवन पर प्रभाव:-

नगरीकरण एवं नगरी सभ्यता का कुछ ज्यादा असर ग्रामीण राजनीति पर नहीं दिखाई देता है। गांव अरसे तक इस देश की स्वयंपूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार किए जाते रहे हैं और उस समय भी जब पाटलिपुत्र, अवंतिका, उज्जैन जैसे महत्वपूर्ण राज्य केंद्र थे अथवा आगे चलकर मुगलों ने दिल्ली, आगरा को अपनी राजधानी बनाया तब भी गांव की स्वयं पूर्णता में अधिक अंतर नहीं आया। स्वतंत्रता के बाद जब जमीदारी व्यवस्था टूटी तो पंचायतें अवश्य ही जमींदारों के अधिकारों से निकली परंतु किसी ना किसी रूप में उन पर जमींदारों का प्रभुत्व बना रहा। इस प्रभुत्व को कथाकार ने स्पष्ट किया है, कि करैता गाँव की पंचायतें अब मलिकाने के चबूतरे पर नहीं होती। अब इन पंचायतों में ठाकुर जयपाल सिंह मुखिया के आसन पर नहीं बैठते। अब गांव के लोग राय और फैसले के लिए उनका मुंह नहीं ताकते पर यदि कोई भी आदमी पिछले पांच-सात महीनों के भीतर करैता गांव में हुई वारदातों और उनके फैसलों का लेखा-जोखा करे तो उसे यह जानकर बड़ी हैरत होगी कि एक भी फैसला ठाकुर के मन के खिलाफ नहीं हुआ।..... क्योंकि करैता में अब एक नहीं दो पंचों का राज था"7 यही दशा आज भी ग्रामीण राजनीति का है कि प्रभुत्व संपन्न लोगों का पंचायतों पर अधिकार बना रहता है। चाहे गांव का मुखिया कोई भी हो।

सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव:-

गांव में संस्कृतिक स्थिरता पाई जाती है। जबकि नगरों में संस्कृति परिवर्तनशील होती है। नगरी संस्कृति का अनुकरण गांव में तेजी से बढ़ा है। 'अलग-अलग बैतरणी' के उपन्यासकार को परंपरा की पहचान के साथ-साथ नई आग का भी अंदाजा था। इसलिए लोक कथा, लोक गीतों के माध्यम से प्राचीन ग्राम संस्कृति को उभार कर वह एक सीधी-सादी जिंदगी के टूटने-बिखरने पर अफसोस करते हैं। कथाकार विपिन के माध्यम से कहलाते हैं "यहां रह कर कूड़ा बनने से अच्छा है, कहीं चला ही जाऊं। मैं तो बड़ी उम्मीदें लेकर आया था। जन्मभूमि के प्रति अपने मन में कम् मोह भी नहीं है, पर ऐसा गंदा और वाहियात हो गया है यह गांव, यह मैं नहीं जानता था। पहले मुझे विश्वास नहीं होता था, पर साल भर यहां रहकर मैंने यह जान लिया है कि इस गांव पर सचमुच ही कीनाराम का श्राप है। इसे बर्बाद होने से कोई रोक नहीं सकता है"। 8

निष्कर्ष:-

नगरीय सभ्यता के विकास या आजादी के बाद का गांव निरंतर परिवर्तनशील रहा है। अनेक नई राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आ जाने से गांव में कुछ खुशहाली तो जरूर आई है, लेकिन उसके सामाजिक संबंधों और मूल्यों में भयानक टूटन आती गई और गांव का जीवन निरंतर स्व केंद्रित और अराजक होता गया। अंततः गांव का जीवन एकदम असहाय हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1-अलग-अलग बैतरणी- शिव प्रसाद सिंह- लोक भारती प्रकाशन -पृष्ठ- 28
2- वही-पृष्ठ-222
3-वही-पृष्ठ-
4-वही-पृष्ठ-17
5-वही-पृष्ठ-10३
6-वही-पृष्ठ-103
7-वही-पृष्ठ-58
8-वही-पृष्ठ-421

अन्य ग्रन्थ सूची:-

1- शिव प्रसाद सिंह: श्रेष्टा और सृष्टि- संपादक पांडे शशि भूषण वाणी – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2- रामदरश मिश्र के आंचलिक उपन्यासों में ग्राम जीवन -अनीता एच. भट्ट- ज्ञान प्रकाशन, कानपुर